



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

**PART II—Section 3—Sub-section (i)**

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

रं. 129]

नई दिल्ली, सोमवार, अप्रैल 1, 1991/चैत्र 11, 1913

No. 129]

NEW DELHI, MONDAY, APRIL 1, 1991/CHAITRA 11, 1913

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

नागर विभाग मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 अप्रैल, 1991

मा.का.नि. 196(अ).—जबकि, भारत सरकार, नागर विभाग मंत्रालय की दिनांक 20 नवम्बर, 1990 की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 918 (ई), जिसमें उससे प्रभावित होने वाले सभी व्यक्तियों से ग्राप्तियां और सुझाव आमंत्रित किए गए थे, के साथ बायुयान अधिनियम, 1934 (1934 का 22) की धारा 14 की अपेक्षानुसार, बायुयान (संशोधन) नियम, 1990 का प्रारूप दिनांक 20 नवम्बर, 1990 के भारत के राजपत्र (असाधारण) के भाग-II [खंड 3 उपखंड (i) में प्रकाशित किया गया था;

और जबकि उक्त अधिसूचना की प्रतियों जनता को 20 नवम्बर, 1990 को उपलब्ध करा दी गई थी;

और जबकि उक्त नियमों के प्रारूप के संबंध में प्राप्त आपत्तियों और सुझावों पर सरकार ने विचार कर लिया है;

अतः श्रब उक्त अधिनियम की धारा 5 धारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार, बायुयान नियम 1937 में आगे और संशोधन करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम बायुयान (बीथा संशोधन), नियम, 1991 है।

(2) ये सरकारी राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से लागू होंगे।

2. बायुयान नियम, 1937 में नियम 6.1 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात्:—

“6.1. बायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों का अनुशासन

(1) नियम 54 के प्रयोजन के लिए, केन्द्रीय सरकार व्यक्तियों को, बायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों प्राधिकृत या

अनुमोदित व्यक्तियों की हैसियत में कार्य करने आंग वायुयान के निर्माण, भरमत, ओवरहालिंग, और अनुरक्षण के संबंध में। उन प्रमाण-पत्रों पर, जो हन नियमों के अधीन महानिदेशक द्वारा विहित किए जाएं या अपेक्षित हों, हस्ताक्षर करने के लिए अनुज्ञितयां, प्राधिकार पत्र और अनुमोदन प्रदान कर सकेंगी।

(2) साधारण अपेक्षाएँ

(अ) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञित जारी किए जाने के लिए प्रत्येक आवेदक निम्नलिखित अपेक्षायों को पूरा करेगा:—

- (क) आवेदक की आयु 21 वर्ष से कम नहीं होगी।
- (ख) आवेदक ने भौतिकी और गणित के साथ 10 + 2 परीक्षा या इंजीनियरी की किसी शाखा में तीन वर्ष का डिप्लोमा या इंजीनियरी की किसी शाखा में डिग्री या ममतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण की हो;
- (ग) आवेदक के पास वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी के क्षेत्र में कम से कम 4 वर्ष का व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए।

परन्तु केन्द्रीय सरकार इंजीनियरों स्नातकों के लिए न्यूनतम अपेक्षा में निम्नलिखित छूट दे सकेंगी यदि वे सुमंगल प्रवर्गों में वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी अनुज्ञित परीक्षा में सम्मिलित होने हैं;

- (1) एयर केम और इंजिनों के प्रवर्गों में ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 18 मास जिनके पास वैमानिक इंजीनियरी की डिग्री हो,
- (2) ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 12 मास जिनके पास यांत्रिकी और विद्युत इंजीनियरी की डिग्री हो,
- (3) सुमंगल प्रवर्ग में ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 12 मास जिनके पास इलैक्ट्रोनिकी दूर संचार इंजीनियरी या अन्य सहबद्ध शाखाओं में डिग्री हो।

परन्तु यह और कि केन्द्रीय सरकार वैमानिक यांत्रिकी/या विद्युत इलैक्ट्रोनिकी इंजीनियरी की डिग्री देने वाली संस्थाओं के ऐसे विद्यार्थियों को सामान्य परीक्षा पत्रों से छूट दे सकेंगी जिन्होंने अपने पाठ्यक्रम के दौरान वायुयान नियम, साधारण इंजीनियरी और कर्मशाला पद्धति, उद्योग के सिद्धांत, वायुयान संरचना, अंतर्दहन इंजिनों के सिद्धांत, बुनियादी इलेक्ट्रोनिकी, बुनियादी संचार प्रणाली, विद्युत प्रणाली और वायुयान उपकरण प्रणाली से संबंधित पेपर उत्तीर्ण किए हों और उन पेपरों का पाठ्य विवरण सिविल विमानन महानिदेशालय द्वारा अनुमोदित हो। ऐसे विद्यार्थियों को 5700 किलोग्राम या उससे अधिक कुल भार के वायुयान/इंजिनों/वायुयान प्रणाली पर 24 मास का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् और 5700 किलोग्राम से कम के कुल भार तक के वायुयान पर 12 मास के व्यवहारिक अनुभव के पश्चात् टाईप रेटिंग अनुज्ञित परीक्षाओं पर मिलित होने की अनुज्ञा दी जा सकेंगी।

परन्तु यह श्रीर श्री कि केन्द्रीय सरकार ऐसे आवेदकों के मामले में जो ग्लाइडरों से सम्बंधित अनुज्ञित परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं न्यूनतम अनुभव के मामले में दो वर्ष तक की छूट दे सकेंगी।

परन्तु यह श्रीर श्री कि केन्द्रीय सरकार ऐसे आवेदकों के संबंध में अनुभव के मामले में एक वर्ष की छूट दे सकेंगी जिन्होंने महानिदेशालय द्वारा अनुमोदित संस्थाओं में प्रशिक्षण समाधानप्रब पूरा कर लिया हो।

(आ) किसी विशिष्ट प्रवर्ग के लिए पूर्वन: विधिमान्य अनुज्ञित के विस्तार या अनुज्ञित के विस्तार या अनुज्ञित में किसी अन्य प्रवर्ग को जोड़ने के लिए इच्छुक प्रत्येक आवेदक के पास उद्योग योग्यता अपेक्षाओं में महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट प्रवर्ग या प्रकार संबंधी पृष्ठोंका में सुमंगल अनुरक्षण अनुभव होना चाहिए।

(3) वे संवर्ग जिनकी बावत वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों के लिए अनुज्ञितयां दी जा सकेंगी, निम्नलिखित होंगी:—

(क) वायुयान को लागू अनुज्ञितयां किंतु इन्हिनों को छोड़कर (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार-II की अनुज्ञितयों के अनुरूप हो) —प्रवर्ग क

(ख) ऐसे वायुयानों की ओवरहालिंग को लागू अनुज्ञितयां जिनका प्रधिकतम कुल भार 5700 किलोग्राम से कम है किन्तु इन्हिनों को छोड़कर (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुज्ञितयों के अनुरूप हो) प्रवर्ग ख;

(ग) इन्हिनों को लागू अनुज्ञितयां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञित II के अनुरूप हो) —प्रवर्ग ग;

(घ) पिस्टन, ऐसे इंजिनों की ओवरहालिंग को लागू अनुज्ञितयां जिनका शक्ति निर्धारण 500 बी एच पी से अधिक न हो (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुज्ञितयों के अनुरूप हो) —प्रवर्ग घ;

(ङ) विद्युत प्रणाली को लागू अनुज्ञितयां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञितयों के अनुरूप हो) —प्रवर्ग ङ;

(च) उपस्कर प्रणालियों को जिनके अंतर्गत स्वचालित पाइलेट भी हैं, (लागू अनुज्ञितयों जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञितयों के अनुरूप हों) —प्रवर्ग I;

(छ) रेडियो संचार मार्गनिर्देशन और राडार प्रणाली को लागू अनुज्ञितयां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञितयों के अनुरूप हों) —प्रवर्ग छ;

(ज) एविएट्रोनिक्स प्रणाली या वायुयान को लागू अनुज्ञात्यां जहां वैद्युत उपकरण और रेडियो प्रणालियां उबलत कंप्यूटर प्रणाली के उपयोग के साथ समाकलित हैं और उड़ान नियंत्रण का संचालन तार प्रौद्योगिकी द्वारा फ्लाई पर आधारित है (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुमतियों के अनुरूप हों) — प्रबर्ग 5;

(म) ऐसे उपकरण वैद्युत उपस्कर, बी. पी. नोवक और स्वचालित पाइलटों की ओवरहालिंग को लागू अनुमतियों जिन्हें ऐसे वायुयान में लगाया गया है जिनका कुल भार 5700 किलोग्राम से कम हो जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुमतियों के अनुरूप हों) — प्रबर्ग X।

(4) उपनियम (3) में अतावधि 1 की बात के होते हुए भी माइक्रोलाइट वायुयानों को किसी भी ऐसे वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर द्वारा इंजीनियर प्रमाणित किया जा सकेगा जिसके पास यथास्थिति, प्रबर्ग-क, प्रबर्ग-ख, प्रबर्ग-ग, प्रबर्ग घ या प्रबर्ग X की अनुमति है।

(5) अनेक वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों की अनुमतियों के विशेषाधिकार निम्नलिखित होंगे :

(क) प्रबर्ग क, ग, घ, 1 द और 5 की अनुमतियों के लिए,—

(1) संबंधित प्रबर्ग की अनुज्ञाति में पृष्ठांकित वायुयान, इंजिन या प्रणालियों की बाबत उड़ान विसर्जन प्रमाणन;

(2) निरीक्षण महानिदेशक द्वारा अनुमोदित अनुरक्षण अनुमूली के अधीन किया गया कार्य, महानिदेशक द्वारा अनुमोदित छोटी मरम्मत, महानिदेशक द्वारा अनुमोदित उपांतरण और संगठकों, पुर्जों का प्रतिस्थापन और संबंधित प्रबर्ग की अनुज्ञाति में पृष्ठांकित वायुयान, इंजन या प्रणाली जैसी भी स्थिति हो, की बाबत उनके निरीक्षण का लागबूक में प्रमाणन;

(ख) प्रबर्ग ख, घ और X की अनुमतियों के लिए,—

(1) वायुयान, इंजिन, साधित, उपस्कर या जिनका संबंधित प्रबर्ग की अनुज्ञाति में पृष्ठांकन किया गया है की बाबत महानिदेशक द्वारा अनुमोदित प्रक्रिया और तकनीक के अनुसार की गई ओवरहालिंग मरम्मत, उपांतरण, परोक्षण या प्रतिस्थापन का प्रमाणन;

(2) महानिदेशक द्वारा अनुमोदित मानविक्ष के अनुसार और महानिदेशक द्वारा अनुमोदित सामग्री और महानिदेशक द्वारा अनुमोदित लोटों से अभिप्राप्त सामग्री से बने संगठकों और पुर्जों के सक्षिर्माण का प्रमाणन, जबकि उसे अनुज्ञाति में विनिर्दिष्ट रूप से अप्रवर्जित न कर दिया गया हो।

(6) प्राधिकार प्रमाणपत्र का जारी किया जाना :—

केन्द्रीय सरकार किसी नये वायुयान, इंजिन, प्रणाली या उपस्कर की किसी मद, जिसे भारत में लाया गया है और जो अनुज्ञाति की परिधि के अंतर्गत नहीं आती की बाबत अनुरक्षण का प्रमाणपत्र या उड़ान विसर्जन प्रमाणपत्र या दोनों प्रमाणपत्र जारी करने के लिए वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी की अनुमति के धारक को प्राधिकार प्रमाणपत्र दे सकेगी :—

परन्तु ऐसा प्राधिकार तब तक प्रदान नहीं किया जाएगा जब तक कि—

(1) केन्द्रीय सरकार का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसे धारक के पास पर्याप्त प्रशिक्षण और अनुभव है, और

(2) ऐसे धारक ने ऐसी परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और उड़ान योग्यता अपेक्षाओं से संबंधित महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट ऐसा सबूत प्रस्तुत कर दिया है।

(7) अनुमोदन पत्र का जारी किया जाना—

केन्द्रीय सरकार किसी वायुयान, इंजिन, प्रणाली संगठक, उपकरण, उपमाधन या उपस्कर की कोई मद जिसके अंतर्गत महानिदेशक द्वारा अनुमोदित प्रक्रिया के अनुसार किए गए निरीक्षण अनुरक्षण, ओवरहालिंग, मरम्मत, उपांतरण या, परीक्षण के पश्चात रेडियो उपस्कर भी हैं, की बाबत अनुरक्षण प्रमाणपत्र जारी करने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमोदित किसी संगठन में नियोजित किसी आवेदक को अपना यह समाधान हो जाने पर कि आवेदक के पास पर्याप्त ज्ञान और अनुभव है तथा उसने सिविल उड़ान योग्यता अपेक्षाओं से संबंधित महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट परीक्षा पास कर ली है अनुमोदन पत्र दे सकेगी।

(8) सक्षमता प्रमाणपत्र :

केन्द्रीय सरकार अपना यह समाधान हो जाने पर कि आवेदक के पास सक्षमता और कुप्रालता है और उसने महानिदेशक द्वारा विद्वित परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली है किसी वायुयान की उड़ान योग्यता को प्रभावित करने वाली किसी विशेष प्रक्रिया को कार्य रूप देने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमोदित फार्म में नियोजित किसी व्यक्ति को सक्षमता प्रमाणपत्र प्रदान कर सकेगी।

(9) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की अनुज्ञाप्ति प्रदान करने या उसके विस्तार के लिए आवेदक निम्नलिखित को समाविष्ट करने वाले परीक्षण उत्तीर्ण करेगा :—

- (क) विशिष्ट परीक्षा,
- (ख) मौखिक परीक्षा,
- (ग) व्यावहारिक परीक्षा;

परन्तु भारतीय वायुसेना या भारतीय नी सेना या भारतीय थल सेना की वायु संक्रिया विग के किसी ऐसे व्यक्ति को जो महानिदेशक के समाधानप्रद ऐसा सबूत पेश करता है कि उसके पास आवश्यक अनुभव, सक्षमता और तकनीकी प्रवीणता का स्तर है, केन्द्रीय सरकार इसमें उपनियम में निर्दिष्ट परीक्षणों या उनके किसी भाग से छूट दे सकेगी।

परन्तु यह और कि केन्द्रीय सरकार, आवेदक को ऊपर विनिर्दिष्ट परीक्षणों या उसके किसी भाग से उन शर्तों के अधीन जिन्हें वह ठीक समझे, उस दशा में छूट दे सकेगी जब आवेदक के पास वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की हैसियत में कार्य करने के लिए किसी ऐसे विदेशी राज्य के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रदत्त अनुज्ञाप्ति है जो अभिसमय का पक्षकार है।

(10) जो आवेदक उक्त परीक्षणों में से किसी में असफल रहता है, उसे समुचित क्षेत्र में जिसकी महानिदेशक उसे सूचना दें, तीन मास का या अन्य ऐसी किसी अवधि का अतिरिक्त अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् ही ऐसे परीक्षणों में सम्मिलित होने की अनुशा दे दी जाएगी।

#### (11) विधिमान्यता :

(क) अनुज्ञाप्तियों, जब तक कि वे रह या निलंबित न कर दी जाएं, उनमें विनिर्दिष्ट अवधि के लिए, प्रत्येक मासले में दो वर्ष की अधिकतम अवधि के अधीन रहने हुए, विधिमान्य बनी रहेंगी, और आवेदन किए जाने पर 2 वर्ष की अवधि के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा नवीकृत की जा सकेगी, परन्तु यह तब जब कि अनुज्ञाप्ति के नवीकरण के लिए आवेदन को तारीख से पूर्ववर्ती दो वर्ष के दौरान, उसका धारक कम से कम कुल छह मास की अवधि तक वैमानिक इंजीनियरी के कर्तव्यों पर लगाया गया हो, जो या तो व्यावहारिक अनुरक्षण, या सरम्मत या ओवरहार्लिंग के रूप में हो अथवा पर्यवेक्षणीय हैसियत में हो या वायुयान के प्रचालक कर्मी दल के सदस्य के रूप में हो।

(ख) ऐसी अनुज्ञाप्ति का जो वो वर्ष स आधक का अवधि तक से समाप्त रही है केवल तभी नवीकरण किया जाएगा जब आवेदक ने सिविल उड्डयन योग्यता अपेक्षाओं के संबंध में महानिदेशक द्वारा विहित परीक्षण उत्तीर्ण कर लिए हों।

(ग) प्राधिकार प्रमाण-पत्र और सक्षमता प्रमाण-पत्र छह मास से अनवधिक अवधि के लिए विधिमान्य रहेंगे जब तक कि उन्हें रह या निलंबित न कर दिया जाए और केन्द्रीय सरकार उनका और आगे छह मास तक विस्तार कर सकेगी परन्तु तब जब आवेदक पूर्ववर्ती छह महीनों में दो मास तक सगातार उस काम में लगा रहा है।

(घ) अनुमोदन, यदि इनका स्थगन नहीं हो जाता, अधिक से अधिक 1 वर्ष की अवधि के लिए वैध रहेंगे बशर्ते कि आवेदक पिछले एक वर्ष में 3 मास के लिये काम में लगा रहा हो।

(12) किसी विशिष्ट प्रबर्ग में अनुज्ञाप्त वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर, उप नियम (13) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, उस प्रबर्ग की बाबत जिसमें वह अनुज्ञाप्त धारित किए हुए हैं उप नियम (5) में विनिर्दिष्ट विषयों में कार्य करने के लिए सक्षम होगा।

(13) इस नियम के अधीन प्रदान की गई प्रत्येक अनुज्ञाप्ति में उस वायुयान या वायुयान के उस प्रकार या उन प्रकारों का तथा वैमानिक इंजीनों, उपकरणों, उपसाधनों या उस्पकर, का, जिनकी संशाल करने में अनुज्ञाप्तिधारक सक्षम है, विनिर्देश होगा और उसमें वे निर्बन्धन भी हो सकेंगे जो काम के किसी विशिष्ट प्रबर्ग के संबंध में कार्य करने की उसकी क्षमता को परिसीमित करें, और केन्द्रीय सरकार किसी भी समय ऐसे विनिर्देशों या निर्बन्धनों में परिवर्तन कर सकेंगी।

(14) नियम 19 के उप नियम (3) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, केन्द्रीय सरकार, ऐसी जांच के पश्चात् जैसी वह ठीक समझे, और सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देने के पश्चात् इस नियम के अधीन प्रदान की गई किसी अनुज्ञाप्ति, प्राधिकार प्रमाण-पत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण-पत्र को तब रह निलंबित या पूर्णांकित कर सकेगी जब उसका समाधान हो जाता है कि :—

(क) धारक ने ऐसा कोई काम किया है या कोई प्रमाण-पत्र ऐसे किसी काम के बारे में दिया है जो सावधानी से या सक्षम रीति में संपादित नहीं किया गया है; या

(ख) धारक ने ऐसे किसी विषय के बारे में, जिसके संबंध में कार्य करने के लिए वह अनुज्ञाप्त नहीं है, किसी प्रमाण-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं; या

(ग) किसी अन्य कारण से यह अवांछनीय है कि धारक इस नियम के अधीन अनुदत्त अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग करता रहे।

(15) केन्द्रीय सरकार, यदि किसी भारण से ऐसा करना बांछनीय समझे तो, अनुज्ञाप्ति, प्राधिकार प्रमाण-पत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण-पत्र की मंजूरी या नवीकरण रोक सकेगा।

## पाद टिप्पण :

मूल नियम भारत के राजपत्र भाग 1, तारीख 27 मार्च, 1937 की अधिसूचना सं. वी-26 तारीख 23 मार्च, 1937 जारी प्रकाशित किए गए। बाद में उनका निम्नलिखित द्वारा संशोधन किया गया :

- (1) का.नि.प्रा. 1567 तारीख 6 सितंबर, 1952;
- (2) सा.का.नि. तारीख 24 मई, 1957;
- (3) सा.का.नि. 772 तारीख 2 जून, 1962; और
- (4) सा.का.नि. 1739 तारीख 26 नवंबर, 1976

MINISTRY OF CIVIL AVIATION  
NOTIFICATION

New Delhi, the 1st April, 1991

G.S.R. 196(E).—Whereas the draft of the Aircraft (Amendment) Rules, 1990 was published as required by section 14 of the Aircraft Act 1934 (22 of 1934) in the Gazette of India (Extra-ordinary); Part II, Section 3, Sub-section (i) dated the 20th November, 1990 with notification of the Government of India in the Ministry of Civil Aviation No. GSR 918(E) dated the 20th November, 1990 inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby;

And whereas the copies of the said notification were made available to the public on 20th November, 1990;

And whereas the objections and suggestions received on the said draft rules have been considered by the Central Government;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 5 of the said Act, the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Aircraft Rules, 1937, namely :—

1. (1) These rules may be called the (4th Amendment) Rules, 1991.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the official Gazette.

2. In the Aircraft Rules, 1937, for rule 61, the following rule shall be substituted, namely :—

“61. Licensing of Aircraft Maintenance Engineers

(1) For the purpose of rule 54, the Central Government may grant licences, Authorisations and Approvals to persons to act in the capacity of Aircraft Maintenance Engineers, Authorised or Approved persons and to sign, in connection with construction, repair, overhaul and maintenance of aircraft, such certificates as may be prescribed by the Director General or required under these rules.

(2) General Requirements.

(A) Every applicant for the issue of Aircraft Maintenance Engineer's licence shall satisfy the following requirements :

- (a) The applicant shall be not less than 21 years of age.

(b) The applicant must have passed 10+2 examination with Physics and Mathematics or three years diploma in any branch of engineering or degree in any branch of engineering or equivalent examination;

(c) The applicant shall possess a minimum practical experience of four years in the field of aircraft maintenance engineering.

Provided that the Central Government may grant relaxation with respect to the minimum requirement for engineering graduates, if they appear in Aircraft Maintenance Engineer's licence examination in the relevant categories as under :

- (i) Engineering graduates holding aeronautical engineering degree by 18 months in the categories of airframe and engines,
- (ii) Engineering graduates holding degree in mechanical and electrical engineering by 12 months,
- (iii) Engineering graduates holding degree in electronics/telecommunications engineering or other allied disciplines by 12 months in the relevant category.

Provided further that the Central Government may grant exemption from general papers to such students, of engineering institutions awarding degree in Aeronautical, Mechanical or Electrical/Electronics engineering as have passed during their course papers on Aircraft Rules, general engineering and workshop practices, theory of flights, aircraft structures, theory of internal combustion engines, basic electronics, basic communication systems, electrical systems and aircraft instrument systems, with syllabi approved by Director General of Civil Aviation. Such students may be allowed to appear for type-rated licence examinations after gaining 24 months practical experience on aircraft/engines/systems of aircraft of all up weight of 5,700 Kg. or above and after 12 months practical experience on aircraft with all up weight below 5,700 Kg.

Provided also that the Central Government may relax the minimum experience requirement by a period of two years for applicants appearing for licence examinations on gliders.

Provided also that for applicants who have satisfactorily completed training in institutes approved by Director General, the Central Government may relax the experience requirements by one year.

(B) Every applicant for the extension of a licence already valid for a particular category, or for addition of another category in his licence, shall possess maintenance experience relevant to the category or type endorsement specified by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(3) The categories in respect of which licences for Aircraft Maintenance Engineers may be granted shall be as follows :—

- (a) licences applicable to aircraft but excluding engines (conforming to International Civil

Aviation Organization Type II licences)—

Category A ;

(b) licences applicable to overhaul of aircraft having maximum all up weight below 5700 kgs. but excluding engines (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category B ;

(c) licences applicable to engines (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category C ;

(d) licences applicable to overhaul of pistons, engines with the power rating not exceeding 500 BHP (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category D ;

(e) licences applicable to electrical systems (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category E ;

(f) licences applicable to instruments systems including autopilots (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category I ;

(g) licences applicable to radio communication navigation and radar system (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category R ;

(h) licences applicable to avionics systems or aircraft where electrical instruments and radio systems are integrated with the use of advanced computer system and the operation of flying controls is based on fly by wire technology (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category V ;

(i) licences applicable to overhaul of instruments, electrical equipment, radio equipment, V. P. propellers and autopilots as installed on aircraft with all up weight below 5700 kgs. (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category X.

(4) Notwithstanding anything contained in sub-rule (3) microlight aircrafts may be certified by any Aircraft Maintenance Engineer, holding a licence in category A, category B, category C, category D or category X as the case may be.

(5) The privileges of the various Aircraft Maintenance Engineer's licences shall be as follows :

(a) For licences in categories A, C, E, I, R and V,—

(i) certification of flight release in respect of aircraft, engine or systems endorsed in the licence in the respective category ;

(ii) certification in the logbook of inspection, work done under maintenance schedule approved by the Director General, minor repairs approved by the Director General, modifications approved by the Director General, and replacements of components,

parts and inspection thereof in respect of aircraft, engine or systems as the case may be, endorsed in licence in the respective category.

(b) For licences in categories B, D and X,—

(i) certification of overhaul, repairs, modifications, tests or replacements effected in accordance with the procedures and techniques approved by the Director General, in respect of aircraft, engines, instruments, equipment or endorsed in the licence in the respective category ;

(ii) certification of the construction of components and parts fabricated in accordance with drawings approved by the Director General and from materials approved by the Director General and obtained from sources approved by the Director General unless specifically excluded in the licence.

(6) Issue of Authorisations.

The Central Government may grant Authorisation to the holder of an Aircraft Maintenance Engineer's Licence to issue a certificate of maintenance or a certificate of flight release or of both, in respect of any new aircraft, engine, system or items of equipment which have been brought into India and which are not within the scope of his licence.

Provided that no such authorisation shall be granted unless,—

(i) the Central Government is satisfied that such holder has sufficient training and experience, and

(ii) such holder has passed such examination and furnished such evidence specified by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(7) Issue of Approval.

The Central Government may grant Approval to an applicant employed in an organisation approved by the Director General to issue a certificate of maintenance in respect of an aircraft, engine, system component, instrument, accessory or item of equipment including radio equipment after inspection, maintenance, overhaul, repair, modification or test performed in accordance with the procedures approved by the Director General upon being satisfied that the applicant has sufficient knowledge, experience and has passed such examinations as specified by Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(8) Certificate of Competency.

The Central Government may grant a Certificate of Competency to an applicant employed in a firm approved by Director General to perform specialized processes which may affect the airworthiness of an aircraft, upon being satisfied that the applicant has competency and skill and has passed such examinations prescribed by Director General.

(9) An applicant for grant or extension to an aircraft maintenance engineers licence shall undergo tests which may consist of :

- (a) written examination
- (b) oral examination.
- (c) practical test.

Provided that any person from Indian Air Force or Indian Navy or Air Operational Wing of Indian Army who produces evidence to the satisfaction of the Director General that he possesses necessary experience, competency and standard of technical proficiency, may be exempted by the Central Government from any of the tests or part thereof referred to in this sub rule.

Provided further that the Central Government may subject to such conditions as it may deem fit, exempt any applicant from any of the tests or part thereof referred above if the applicant holds a licence granted by a competent authority of a foreign state party to the convention to act in the capacity of Aircraft Maintenance Engineer.

(10) An applicant who fails in any of the above tests shall be permitted to appear again for such tests only after acquiring additional experience of three months or such other period in the appropriate field as may be intimated to the applicant by the Director General.

#### (11) Validity.

- (a) Unless cancelled or suspended, licences shall be valid for the period specified therein, subject to a maximum period of 2 years in each case, and may thereafter be renewed by the Central Government for another 2 years on application, provided that during the 2 years preceding the date of application for the renewal of the licence, the holder has been engaged for a period totalling at least six months in aeronautical engineering either in practical maintenance or repair or overhaul or in a supervisory capacity or as a member of operating crew of an aircraft.
- (b) licence which has remained expired for a period in excess of two years shall be renewed only after the applicant has passed such tests as prescribed by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.
- (c) Authorisations and certificates of competency shall remain valid, unless cancelled or suspended, for a period not exceeding 6 months and may be extended by the Central Government for a further period of 6 months provided the applicant has been continuously engaged in the performance of the task for two months within the preceding six months.

(d) Approvals shall remain valid unless suspended, for a period not exceeding 1 year provided the applicant has been engaged in the performance of the tasks for 3 months in the preceding one year.

(12) An Aircraft Maintenance Engineer licensed in a particular category shall, subject to the provisions of sub rule (13), be competent to deal with the matters specified in sub rule (5) in respect of the category of licence which he holds.

(13) Every licence granted under this rule shall specify the type or types of aircraft, aero engines, instruments, accessories or equipment which the licensee is competent to deal with, and may contain restrictions limiting his competence to deal with any particular class of work, and the Central Government may at any time vary such specifications or restrictions.

(14) Without prejudice to the provisions of sub rule (3) of rule 19, the Central Government may after such inquiry as it may deem fit and after giving a reasonable opportunity of being heard, cancel, suspend or endorse any licence, authorisation, approval or certificate of competency granted under this rule where it is satisfied that,—

- (a) the holder has performed work or granted a certificate in respect of work which has not been performed in a careful and competent manner or ;
- (b) the holder has signed a certificate in respect of any matter which he is not licensed to deal with, or
- (c) it is undesirable for any other reason that the holder should continue to exercise his privileges granted under this rule.

(15) The Central Government may withhold the grant or renewal of a licensee, authorisation, approval or certificate of competence if for any reason it considers it desirable to do so."

[F. No. AV. 11012/7/90-A]

RAVINDRA GUPTA, Jt. Secy.

#### FOOT NOTE

The Principal Rules were published vide notification No. V-26 dated the 23rd March, 1937 in the Gazette of India, Part I dated the 27th March, 1937.

Subsequently amended by :

- (i) SRO 1567 dated 6th Sept., 1952 ;
- (ii) GSR dated 24th May, 1957 ;
- (iii) GSR 772 dated 2nd June, 1962 ; and
- (iv) GSR 1739 dated 26th November, 1976.

